शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कथक का लखनऊ घराना और पं. कृष्णमोहन मिश्रा महाराज

मेघा शर्मा (शोधार्थी)
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य है जिसकी उत्पत्ति कथा कहने से हुई है। प्राचीन काल में पौराणिक कथाओं को नृत्य आदि हावभाव के द्वारा बड़े रोचक ढंग से जनसमूह तक पहुंचाया जाता था। और यही रूप समय के साथ शास्त्रीय नृत्य कथक में धीरेधीरे परिवर्तित हो गया। शास्त्रीय नृत्य की इस कथक शैली के चार घराने हुए। जिनमें से लखनऊ घराने ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। इस घराने के प्रवर्तक ईश्वरीय प्रसाद जी को माना जाता है, जो इलाहाबाद जिले के हंडिया ग्राम के निवासी थे। इन्हीं के वंशजों ने इस घराने को आगे बढाया और इसे नवीन उंचाईयों तक पहुंचाया है। जिसके फलस्वरूप 'लखनऊ घराना' आज कथक के विभिन्न घरानों में विशिष्ट पहचान लिए हुए है। वर्तमान में कथक नृत्य में कई नवीन और सृजनात्मक प्रयोग हो रहेहैं। इस घराने की शैली को और अधिक आगे बढ़ाने तथा इसकी परंपरा को बरकरार रखने का कार्य इस घराने की सातवीं पीढ़ी के उत्कृष्ट कलाकार एवं गुरू पं. कृष्णमोहन मिश्रा महाराज द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान में कथक नृत्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच चुका हैं तथा इसे यहां तक पहुंचाने का निरंतर प्रयास इस घराने के वंशजों द्वारा किया जाता रहा है।

भूमिका

कला के विकास से ही संस्कृति का निर्माण होता है। भारतीय संगीत हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर है। गायन वादन तथा नृत्य मिलकर संगीत कहलाते है। संगीत रत्नाकर में कहा गया है :

"गीतं वाद्यं च नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।
शारंगदेन कृत "संगीत रत्नाकर।।"

अर्थात गायन, वादन एवं नृत्य तीनो कलाओं को संगीत कहा जाता है। ये तीनों कलाएं स्वतंत्र होते हुए भी साथ होने पर एक दुसरे को पूर्ण करती है।

मनुष्य के जन्म के साथ ही अनेक भाव स्वतः ही उसमें आ जाते हैं। सुख-दुख, हर्ष, क्रोध रोमांच, डर, चिंता, उत्साह आदि ये सभी समय के साथ हर परिस्थिति तथा काल में मनुष्यों में दिखने लगते हैं और इन भावों की अभिव्यक्ति वह अपने चेहरे तथा शारीरिक क्रियाओं द्वारा प्रकट करता है।

मानव जाति ने प्रकृति से भी कितना कुछ सीखा और उसने अपनी कलाओं द्वारा दर्शकों के मन को मोहा है। जैसे पक्षियों की आवाज, नदियों का बहना, मोर का पंख फैलाना, झरनों का बहना, फूलों का खिलना आदि प्रकृति के कई रूपों को देख उससे प्रेरणा ली और उसे नृत्य आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा यही क्रिया-कलाप हाव-भाव, शारीरिक क्रिया कलाप तथा अंग भंगिमाओं ने स्वतः ही नृत्य का रूप ले लिया।

नृत्य अंग भंगिमाओं तथा हावभाव द्वारा अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम है। भारत के शास्त्रीय नृत्यों में कथक नृत्य का विशिष्ट स्थान है, जो कि उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। अगर नृत्य के

इतिहास को देखा जाए तो यह ज्ञात होता है कि यह नृत्य समाज, जनसाधारण तथा धर्म से इतना जुडा हुआ था कि इसे मात्र मनोरंजन का साधन नही कहा जा सकता। कथक नृत्य शैली में तांडव लास्य तथा तेजी तैयारी के साथ चक्करों का जो सुन्दर प्रदर्शन किया जाता है। वह इस नृत्य शैली को पूर्णता प्रदान करता है। कथक नृत्य के वर्तमान में कई घराने हैं। जिनमें से लखनऊ घराने का अपना विशिष्ट स्थान है।

लखनऊ घराना

लखनऊ घराने को लेकर कई किवंदतियां हैं, परंतु यह सर्वमान्य सत्य है कि लखनऊ घराने के प्राप्त इतिहास की गाथा, गायन एवं वाद के परंपरागत पेशे से जुडे एक कथक परिवार की सतत तपस्या, बुध्दि, कल्पना एवं असाधारण सर्जना व प्रतिभा के बेजोड, संगम की कहानी है। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले के हंडिया तहसील के चुलबुला गांव के निवासी ईश्वरीय प्रसाद मिश्र ब्राह्मण थे। एक किवदंती के अनुसार भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें स्वयं दर्शन देकर आदेश दिया कि वे नटवरी नृत्य (कथक नृत्य) का प्रचार प्रसार करें। ईश्वरीय प्रसाद जी ने कथक नृत्य का पुनरूध्दार करने में अपना तन मन, धन लगा दिया। उन्होंने इस कार्य को 80 वर्ष की उम्र में पूरा किया तथा कहा जा सकता है कि कथक नृत्य पर भगवान श्री कृष्ण की भक्ति का प्रभाव इन्हीं के द्वारा प्रतिष्ठित किया गया। जिसकी परंपरा आज भी विद्यमान है। उनके तीन पुत्र हुए अडगुजी खडगुजी और तुलाराम जी अपने तीनों पुत्रों को सौ वर्ष आयु तक नृत्य शिक्षा देकर पारंगत किया तथा 105 वर्ष की आयु में ईश्वरीय प्रसाद जी का देहांत सांप के काटने से हुआ।

इस प्रकार ईश्वरीय प्रसादीजी के द्वारा इस कथक शैली को आगे बढाया गया तथा उनके जाने के पश्चात उन्हीं के वंशजो ने इस नृत्य शैली को परंपरागत रूप से बनाए रखा तथा समयानुसार नवीन प्रयोगों के साथ उसे उच्च शिखर तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वर्तमान में देखें तो कथक नृत्य का स्वरूप ही बदल गया है। यह नृत्य प्राचीन काल में एकल नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता था परंतु अब इसे समूह में भी किया जाने लगा है। लखनऊ घराने में कई ख्याति लब्ध कलाकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। जिससे इस घराने को अदब और नवाबी ठाट-बाट वाला घराना भी कहते हैं। इस घराने में लखनऊ की अदायगी तथा तहजीब साफ-साफ नजर आती है। लखनऊ घराने की कई विशेषताएं है जिनमें से कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है :

1 लखनऊ घराना कथक नृत्य शैली का प्रमुख घराना है।

2 इसमें अधिकांशतः छोटे-छोटे टुकडे नाचे जाते है।

3 टुकडों में पैरों से बोलों की निकासी पर ध्यान न देकर अंगों की खुबसूरती पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

4 थाट बनाने का भी इनका विशेष ढंग होता है।

5 इस घराने में कवित्त कम नाचे जाते है, अपवाद स्वरूप पद्मश्री शंभु महाराज जी तथा पं. लच्छु महाराज ने कुछ कवित्त की रचना की है।

6 ठुमरी गाकर उस पर भाव बताने का कार्य इस घराने की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

7 पं. बिंदादीन महाराज जी के द्वारा 1500 से भी अधकि ठुमरियां रची गई है, जो कि लखनऊ घराने में बिंदादीन जी की अमूल्य धरोहर के रूप

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

में आज भी कलाकार उन ठुमरियों पर भाव प्रदर्षित करते हैं।

8 लखनऊ घराने में मुगल दरबारों का रंग आज भी दिखता है। इस घराने में बड़ी तहजीब व अदायगी छलकती है।

9 महाराज बिंदादीन जी ने ठुमरियों के अलावा भी धुपद, सादरा, होरी, दादरा व भजन जैसी विभिन्न शैलियों में भी अतिसुन्दर रचनाएं की है।

10 प्राचीन काल में लखनऊ घराने के नर्तक या कलाकार अंगरखा, पैजामा, तुर्रे वाली टोपी आदि वेशभूषा पहनते थे।

वर्तमान में कथक में कई नवीन प्रयोगों को किया जा रहा है। वहीं वेशभूषा भी काफी बदल गई है। उसमें भी कलाकार अपने अपने तरीके से वेशभूषा धारण कर नृत्य प्रदर्शित करते हैं।

पं. कृष्णमोहन मिश्रा महाराज : व्यक्तित्व

अभिनय सम्राट, अभिनय चक्रवर्ती, नृत्य सम्राट एवं नृत्य अवतार आदि अनेक उपाधियों से सम्मानित पद्मश्री शम्भु महाराज जी के ज्येष्ठ पुत्र पं. कृष्णमोहन मिश्रा महाराज जी भी लखनऊ घराने की सातवीं पीढी हैं, जो अपने सतत प्रयासों और साधना से कथक नृत्य को नए आयाम तक पहुंचाने का निरंतर कार्य कर रहे हैं। पंडित कृष्ण मोहन मिश्रा जी का जन्म 20 सितंबर 1954 को नागपंचमी के दिन हुआ। लखनऊ घराने की वंश परंपरा को बरकरार रखते हुए आप आज तक कथक नृत्य के प्रचास्प्रसार में देश विदेशों में लगातार अपनी प्रस्तुतियां दे रहे हैं तथा अनेक शिष्य तैयार कर अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। पं. कृष्णमोहन मिश्रा महाराज जी के नृत्य में लखनऊ घराने की बारीकियां एवं विशेषताएं साफ परिलक्षित होती हैं। तालपक्ष, पैरों की तैयारी तथा चक्करों पर पं. कृष्णमोहन जी का असाधारण अधिकार है और उनकी ये सभी विशेषताएं अनके शिष्यों में भी देखने को मिलती हैं। पंडित जी सृजनात्मक प्रतिभा संपन्न कलाकार तो हैं ही, साथ ही उन्होंने अपने घराने की परंपरा को बरकरार रखते हुए वर्तमान युग की मंचीय आवश्यकता से दोस्ती की ओर उसे नए सीरे से संवारा भी है। पंडित कृष्णमोहन मिश्रा महाराज का शुरूआती दौर अनेक कठिनाइयों से गुजरा तथा उन्होंने अपने जीवन में कई उतार-चढाव देखे जिसके कारण आज वे कथक जगत के प्रख्यात कलाकार होते हुए भी एक साधारण व्यक्तित्व और सरल स्वभाव से प्रत्येक व्यक्ति के दिल में अपना विशिष्ट स्थान बना लेते है। उनके योग्य, आदर्श धर्मिता तथा अनुकरणीय व्यवहार कौशल तथा अत्यंत सहज और स्नेही स्वभाव से वे भीड़ में भी अपने आप को अलग कर लेते हैं। गुरूजी बातचीत के दौरान उर्दू के शब्दों का प्रयोग करते है, जो लखनऊ घराने की अदाकारी को परिलक्षित करती है। उनके सानिध्य में आया हर व्यक्ति उनका हो जाता है। उनका मनोविनोद युक्त स्वभाव गंभीर से गंभीर माहौल को भी चुटकियों में हल्का कर देता है। आप कथक केन्द्र नई दिल्ली के वरिष्ठ गुरू के पद पर 50 वर्षो तक सेवा देते हुए तीन वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त हुए।

पुरूस्कार एवं सम्मान

पं. कृष्णमोहन मिश्रा महाराज को उनकी कथक की अखंड सेवा करने के लिए अनेक पुरस्कार और उपाधियाँ प्रदान की गयीं।

1 आई.सी.सी. आर के बेहतरीन कथक कलाकार।

2 दिल्ली दूरदर्शन के श्रेष्ठतम कलाकारों में से एक।

3 आई.सी.सी. आर नई दिल्ली की ओर से 2004 से 2007 तक बांग्लादेश के नर्तकों को एडवांस्ड प्रशिक्षण देने हेतु पंडित कृष्णमोहन मिश्रा जी की नृत्य विशेषज्ञ के रूप में नियुक्ति की गई।

4 प्रयाग संगीत समिति (इलाहाबाद) द्वारा 'नृत्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित (2014)

5 सन 1973 में प्रयाग संगीत समिति द्वारा 'स्वर्ण पदक' की प्राप्ति।

निष्कर्ष

संपूर्ण शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य यही है कि कथक नृत्य में लखनऊ घराने की विशेषता तथा पंडित कृष्णमोहन मिश्रा जी महाराज के कठीन परिश्रम एवं नृत्य साधना को देख आने वाली पीढ़ी उसे आत्मसात करे। अनेक कलाकारों तथा नृत्य के विद्यार्थियों को नई दिशा एवं प्रेरणा मिल सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 कथक का लखनऊ घराना और पंडित बिरजू महाराज, डॉ.मधुकर आनंद

2 कथक नृत्य शिक्षा भाग 2, डॉ.पुरु दाधीच